Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 4471–4473

HINDI AS THE LANGUAGE OF MASS MEDIA

जनसंचार माध्यमों की भाषा के रूप में हिन्दी

Sonam Kumari [1], Dr. Birendra Nath Mishra [2], Prof. (Dr.) Kalyan Kumar Jha [3], Dr. Sushant Kumar [4], Dr. Sakshee Shalini [5]

[1] Research Student, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur
[2] Associate Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur
[3] Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur
[4] Assistant Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur
[5] Assistant Professor, Department of Hindi, Dharma Samaj Sanskrit College, Muzaffarpur

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.5494

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Language is a medium of communication. Hindi language is used prominently in the media in India. The importance of mass media is constantly increasing in modern life. In such a situation, the importance of Hindi language is also constantly increasing. Among the media of mass communication, print media, electronic media, digital media and web media have become important where Hindi language is being used as a major language. Hindi language is also used the most in cinema, the most popular and influential medium of mass communication. Keeping all these facts in mind, the necessity and significance of Hindi as the language of the media has been discussed in this research article.

Hindi: भाषा संचार का माध्यम है। भारत वर्ष में संचार माध्यमों में हिन्दी भाषा का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है। आधुनिक जीवन में जनसंचार माध्यम का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में हिन्दी भाषा का महत्व भी लगातार बढ़ रहा है। जनसंचार के माध्यमों में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, डिजिटल मीडिया एवं वेब मीडिया जैसे माध्यम महत्वपूर्ण हो गये हैं जहाँ हिन्दी भाषा का प्रयोग एक प्रमुख भाषा के रूप में की जा रही है। जनसंचार के सबसे लोकप्रिय एवं प्रभावशाली माध्यम सिनेमा में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग ही सर्वाधिक किया जाता है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध आलेख के अन्तर्गत संचार माध्यमों की भाषा के रूप में हिन्दी की अनिवार्यता एवं सार्थकता पर विमर्श किया गया है।

Keywords: Interpersonal, Verbal, Non-Verbal, Mass Communication, Resocialization, Desocialization, Social Disintegration अन्तःवैयक्तिक, मौखिक, अमौखिक, जनसंचार, पुनर्समाजीकरण, विसमाजीकरण, सामाजिक विघटन

1. प्रस्तावना

संचार के बिना जीवन संभव नहीं है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। इस तरह संचार एक प्रक्रिया है जिसमें कई तत्व शामिल हैं। संचार के कई प्रकार है जिनमें मौखिक और अमौखिक संचार के अलावा अंतःवैयक्तिक, समूह संचार और जनसंचार प्रमुख हैं।

जनसंचार कई मामलों में संचार के अन्य रूपों से अलग हैं। जनसंचार सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के अलावा एजेंडा तय करने का भी करता है। भारत में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। जनसंचार माध्यमों का लोगों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों का सचेत होना बहुत जरूरी है।

2. मुख्य भाग

लक्ष्मेंद्र चोपड़ा का मत हे कि ''आधुनिक जनसंचार माध्यम ऐसे व्यक्तियों के बीच सामान्य सहमति का निर्माण करते हैं, जो आमतौर पर परस्पर आमने-सामने नहीं मिलते हैं। समाज में सामान्य सहमति के निर्माण की प्रौद्योगिकीय प्रक्रिया के कारण जनसंचार माध्यम समाज की संस्कृति को भी प्रभावित करते हैं। वस्तुतः जनसंचार माध्यम संदेश उत्पादन तथा वितरण की प्रक्रिया में एक बड़े सामाजिक समूह को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करते हैं, जिसके कारण समूह की संस्कृति के भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही प्रारूपों पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक परिवर्तन हो सकते हैं।''[1]

जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम सिनेमा है। हालाँकि यह जनसंचार के माध्यमों की तरह सीधे तौर पर सूचना देने के काम नहीं करता, लेकिन परोक्ष रूप में सूचना, ज्ञान और संदेश देने का काम करता है। सिनेमा को मनोरंजन के एक सशक्त माध्यम के तौर पर देखा जाता रहा है।

जनसंचार माध्यम स्वयं भी सामाजिक संस्थानों के रूप में नयी मान्यताओं तथा मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर पुनर्समाजीकरण करते हैं। इस प्रक्रिया में पूर्व प्रचलित सांस्कृतिक-अभिवृत्तियों, रीत-नीति तथा मूल्यों में परिवर्तन होता है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया हमेशा समाज के लिये कल्याणकारी हो यह आवश्यक नहीं है, अवमूल्यन की स्थिति में विसमाजीकरण भी हो सकता है। जन संचार माध्यम न सिर्फ सामाजिक परिवर्तन के लिये महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि सामूहिक विवेक द्वारा सामाजिक विघटन रोकने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। सीधा अर्थ यह है कि जनसंचार माध्यम सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के अपने सामाजिक उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं कर सकते।

कैलाश नाथ पाण्डेय का मत है कि ''कुल मिलाकर संचार आज सभी के लिए एक मूलभूत सामाजिक अवश्यकता बन गया हे। वस्तुतः संचार एक सहज प्रवृति है। समस्त प्राणी जगत संचार की एक लम्बी नैसर्गिक श्रृंखला से जुड़ा हुआ है अर्थात् ऐसा कोई भी क्षण नहीं होता, जब हम संचार की प्रक्रिया से न गुजर रहे हों। मस्तिष्क विज्ञानियों का कहना है कि हमारे शरीर की लाखों कोशिकाएँ भी लगातार एक-दूसरे से संचार करती रहती है और जिस क्षण यह संचार प्रक्रिया बंद हो जाती है, उसी क्षण हम मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। मृत्यु का दूसरा नाम संप्रेषणहीनता अथवा संचार शून्यता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अमेरिका का हर व्यक्ति अपनी जाग्रतावस्था का सत्तर प्रतिशत संचार जैसे-सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में व्यतीत करता है। संचार का सामान्य अर्थ है- विचारों मतों-अभिमतों, धारणाओं-अवधारणाओं, अनुभावों-अनुभूतियों का आदान-प्रदान।''[2]

डॉ. राधेश्याम शर्मा का मत है कि ''संचार और उसके साधनों-माध्यमों से हमारा रिश्ता आदिम है, किन्तु पिछले कुछ सालों से अर्थात जब से सूचना का विस्फोट, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, तथा उपग्रहों का फैलाव और जनसंचार तकनीकी का विकास तीव्र गति से हुआ है तथा पूरी दुनिया में ताल ठोकते हुआ है-तब से यह शब्द हमारे और नजदीक आ गया है। इसके माध्यम से दुर्लभ सूचनाएँ बह रही हैं। महीना मिनट में तब्दील हो गया है। ऐसा लगता है, जैसे हमारे देश में हालिया जन्मा है, पर आपको मुझे बताते हुए गर्व हो रहा है कि जनसंचार भी अब एक विज्ञान की स्थिति को प्राप्त हो गया है, क्योंकि इनके परिणाम तथा तथ्य विज्ञान की तरह पहले से ही निश्चित किए जाते हैं, तभी तो जनसंपर्क को जनमत निर्माण की इंजीनियरी या अभियांत्रिकी कहते है।''[3]

डॉ. चन्द्रकुमार ने लिखा है कि ''संचार एक प्रक्रिया है, तंत्र नहीं। संचार एक मूलभत वैयक्तिक एवं सामाजिक आवश्यकता तथा सार्वभौमिक मानवाधिकार है। संचार के बिना जीवन में सम्पूर्णता नहीं हो सकती है।''[4]

कैलाशनाथ पाण्डेय लिखते हैं कि ''इधर सूचना तकनीक के विस्फोटी समय में हिन्दी को सशक्त संचार भाषा के रूप में नया उभार और रूप मिला है। वस्तुतः इलेक्टानिक संचार माध्यमों के विकास की कल्पना भाषा के बिना नहीं की जा सकती। इस दृष्टि से भाषा का विकास भी संचार माध्यमों के विकास के साथ होता चलता है, जिससे नए-नए अर्थ, नई-नई शैलियाँ भाषा के कोष में जुड़ती है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों ने दिक-काल की सीमाओं को पार कर लिया है। जिस गति से इनका विकास हो रहा हे, उस गति से हिन्दी का आधुनिककीकरण भी हो रहा है, जिसकी प्रकृति त्रिदिशीय है- लोकवादी, राष्ट्रवादी और अन्तर्राष्ट्रवादी। रेडियों, दूरदर्शन कम्प्यूटर, इंटरनेट, दूरसंचार माध्यमों-टेलीग्राम, टेलीप्रिंटर, फैक्स, टेलीफोन, विज्ञापन तथा जनसंचार भाषा के रूप में हिन्दी को जनसंचार भाषा का मुकम्मल रूप दिया है।''[5]

डॉ. कृष्ण कुमार का मत है कि ''विश्व में भाषा का बोल-चाल में, आदान-प्रदान होना शुरू हुआ तो इसके प्रचार-प्रसार के लिए भोजपत्रों से लेकर शिलालेखों तक की रचना की गई। यही रचना भाषा सम्प्रेषण का यात्रा बिंदु है । जैसे-जैसे कागज की खोज हुई, भाषा का स्वरूप ही बदल गया। आदमी के विकास में कागज की खोज और उसकी भाषा, संप्रेषणीयता उसकी विकास यात्रा का अन्य विधाओं में प्रचार-प्रसार का चलन बढ़ा। इस विकास के आधुनिक नमूनों के परिवर्तन के दौर से हम आज गुजर रहें हैं। संचार तथा संप्रेषण भाषा के विकास के स्त्रोत बिंदु हैं। कागज की खोज के बाद भाषा का निरंतर विकास हुआ, समाचार पत्रों के जन्म से और जन्म से भाषा ने कई रूप अख्तियार किये। आज भी उसके कितने रूप हमारे सामने हर क्षण बदल रहे हैं।''[6]

संचार से सम्बांधित सभी आविष्कारों के मूल में मनुष्य की अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की मूल प्रवृत्ति रही हैं। कंदराओं में निवास करने वाले आदिमानव ने लगभग पाँच लाख वर्ष पूर्व वाक्शक्ति की ध्वनियों को जनसंचार माध्यम के रूप में प्रयोग कर विकास की सतत् सकारात्मक यात्रा आरंभ की थी। यह यात्रा आज तक जारी है। आज इलेक्ट्रानिक माध्यमों ने राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा भौगालिक सीमाओं को मिटा दिया है। भूमंडलीयकरण ने जनसंचार माध्यमों को अपरिमित संभावनाएँ दी हैं। आज रेडियों, टेलीविजन, सेटेलाइट, कम्प्यूटर, टेलीफोन, इंटरनेट तथा मल्टी मीडिया जैसे आधुनिक जनसंचार माध्यमों के कारण सामाजिक संचारशास्त्री मार्शल मेकलुहान के शब्दों में 'दुनिया बहुत छोटी हो गयी है, एक गाँव बन गयी है, जहां सब कोई लगभग सब कुछ जान सकते हैं।' लेकिन संभावनाओं तथा कार्यों के दृष्टिकोण से जनसंचार माध्यम सूचनाओं के सम्प्रेषक मात्र नहीं हैं। ये व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिये बहुत उपयोगी हैं।

डॉ. राजीव कुमार ने यह लिखा है कि ''खेलों की मानव-जीवन में अहंम भूमिका है। मनोरंजन एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी मनुष्य ने इसके महत्व को समझा है। आधुनिक विश्व में प्रतिस्पर्धा विभिन्न देशों के बीच होने लगी हैं। ओलम्पिक एवं एशियाड आदि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के कारण भी खेलों के प्रति रूचि बढ़ी है। शायद ही कोई दिन ऐसा हो जब राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी न किसी प्रतियोगिता का आयोजन नहीं हो रहा हो। अतः खेलों के प्रति सामान्य जन की रूचि को देखते हुए पत्र-पत्रिकाएं में खेलों के समाचार एवं उनसे सम्बंधित नियमित स्तंभों का प्रकाशन होने लगा हैं। ज्यादातर सभी प्रमुख समाचारपत्र पूरा एक पृष्ठ खेल जगत् की हलचलों को देते हैं।''[7]

पूंजीवादी प्रक्रिया में टेलीविजन की तकनीक इतनी ताकतवर बन गयी है कि वह माध्यम समेत विषय को निगल रही है। नयी तकनीक की संस्कृति का विकास समाज की सामूहिक इच्छा पर निर्भर करता है, लेकिन विकास के लिए लिये बड़े विचार की आवश्यकता होती है। जिस तकनीक के विकास के पीछे बड़ा विचार नहीं होता, वह तकनीक सामाजिक जीवन नष्ट करने लगती है। यही कारण है कि विचार विहीन टेलीविजन को सामाजिक संवाद का शत्रु माना जाने लगा है। सामाजिक विचारक जेम्स पैत्रास ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है, पलायनवादी टेलीविजन कार्यक्रम दूसरी दुनिया के द्वारा इन्द्रजाल बुन रहे हैं। टेलीविजन ने घरेलू जिंदगी और क्रियाकलापों में अंदर और नीचे एक साथ चौतरफा हमला किया है। पश्चिम नियंत्रित टेलीविजन अपने कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश प्रचारित करना चाहते हैं कि दरिद्रता सिर्फ एक वैयक्तिक समस्या है।

सुधीश पचौरी कहते है कि ''किसिम-किसिम की हिन्दी है। कही मराठी हिन्दी, यानी 'मिन्दी' है तो कही गुजराती हिंदी 'गुन्दी' है, कही पंजाबी हिन्दी 'पिन्दी' हैं, तो कही राजस्थानी है। कही तमिल हिन्दी यानी 'तिन्दी' है तो कही हैदराबादी हिन्दी है। कहीं वह हिन्दुस्तानी है, जिसमें उर्दु के अनेक शब्द रहते हैं, कही वह विश्वविद्यालयों में अध्यापकों की अध्यापकी हिन्दी है जो शुद्वीकरण की कायल है, कही वह नितांत फिल्मी संवादों और गीतों की हिन्दी है, कही वह हिन्दी चैनलों की हिं अंग्रेजी है। कही वह ब्लू लाइन बसों में लिखे गलत-गलत शेरों की हिंदी है, कही वह '3 रा मेरा 7 रहे' मार्का स्कूटरी हिंदी है, कही वह धर्म प्रवचनों में बाबाओं की हिंदी है, कही वह राजनेताओं की हिंदी है, कही वह अटल की हिन्दी है, कही वह लालु की बिहारी हिन्दी है, कही वह मुलायम की व्रज 'टच' वाली हिन्दी है, कही वह जनसत्ता की हिन्दी है, तो कही इन्डिया टुडे की हिन्दी है, कही वह अन्य अखबारों की हिन्दी है। अमेरिका में उसे 'कहो ना प्यार है' से लेकर 'यादे' के गाने बनाते हैं, दक्षिण अफ्रीका में जो हिन्दी नहीं जानते वे भी 'कहो न प्यार है' की धुन पर थिरककर संवाद करते हैं। अफगानिस्तान में बुद्ध की प्रतिमा तोड़ी जा सकती है, फिल्में प्रतिबंधित हैं, लेकिन चोरी-छिपे हर टैक्सी वाला हिन्दी गाने सुनता-सुनाता रहता है। हिन्दी का अंडरग्राउंड दिन-रात बनता रहता है। जी.टी.वी. सऊदी अरब से लेकर आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, अमेरिका तक में हिन्दी में संवाद करता है। इस तरह गाँव से लेकर महाद्वीपों तक संचार भाषा के रूप में हिन्दी पसर चुकी है।''[8]

लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा लिखते है कि ''जनसंचार माध्यम समाज को शिक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। समाज वैज्ञानिकों के अनुसार 'शिक्षा' सामाजिक विरासत के हस्तांतरण की प्रक्रिया है। एंडरसन के मत में शिक्षा एक समाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति ऐसी बातें सीखता है जो उसे समाज के जीवन के प्रति स्वयं को समायोजित करने योग्य बनाती है।''[9]

3. निष्कर्ष

जनसंचार आज बड़े व्यापक स्तर कर हमारे सामने उपस्थित है। भारत के अलावा पूरे विश्व में जनसंचार एक अस्त्र की भूमिका निभा रही है। जनसंचार के माध्यम से आज विदेश की खबर घर बैठे देख पा रहे हैं। यह जनसंचार की सबसे बड़ी उपलब्धि है।।

संदर्भ सूची

1. जनसंचार का समाजशास्त्र, लक्ष्मेंद्र चोपड़ा आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) 2002 पृष्ठ-37.
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पाण्डेय, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014 पृष्ठ-300.
3. जनसंचार, सं. डॉ . राधेश्याम शर्मा (डॉ . राजेन्द्र का लेख) पृष्ठ-287.
4. जनसंचार माध्यमों हिन्दी- डॉ . चन्द्र कुमार, क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी दिल्ली, 200.

5. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका, कैलाशनाथ पाण्डेय लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014 पृष्ठ-309.
6. दृश्य-श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम- डॉ. कृष्ण कुमार रत्तु पृष्ठ-43
7. पत्रकारिताः दशा और दिशा, डॉ . राजीव कुमार, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर, 2010 पृष्ठ-65.
8. जनसंत्ता (हिन्दी खड़ी बाजार में)- सुधीश पचैरी, पृष्ठ-(रविवारी) दिल्ली संस्करण, सन् 2001.
9. जनसंचार का समाजशास्त्र, लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा आधार प्रकाशन, हरियाणा-2002 पृष्ठ-91.